IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत–म्यामार आर्थिक सहयोग का सवरूप

पप्पु कुमार

भारत एवं म्यामार एक – दुसरे के साथ नजदीकी एवं सहयोगात्मक संबंध रखते है । दो हजार वर्षों के एतिहासिक एवं संस्कृति सहयोग तथा दोनों देशों के बीच 1,600 कीमी. के लम्बे सीमा के चलते यह संबंध और मजबूत हुआ है । 1960 के दशक में भारत म्यामार का सबसे बड़ा व्यापारिक हिस्सेदार था जिसमें व्यापार का संतुलन बर्मा के पक्ष में था । क्योकि भारत, म्यामार से बड़ी मात्रा में चावल आयत करता था। म्यांमार सरकार के केन्द्रीय सांखियकी संगठन द्धारा प्रकाशित आंकड़े के अनुसार वर्ष 1980 – 81 में 12.4 मिलियन अमरीकी डालर का व्यापर 90 के दशक में 328 मिलियन डालर तक पहुंच गया । व्यापर की राशि 2009-10 तक 112 खरब अमरीकी डालर पहुँच गया । मात्र दो वर्षों में दोगुनी वृद्धि दर्ज ध गई । थाईलैंड, सिंगापुर, चीन के बाद भारत चौथा सबसे बड़ा म्यांमार का व्यापारिक हिस्सेदार है ।

द्विपक्षीय व्यापर

भारत द्धारा कृषि एवं जंगल आधारित उत्पाद का म्यांमार से सबसे ज्यादा आयत होता है । म्यांमार, भारत को बिन एवं दल निर्यात करता है । म्यांमार द्धारा भारत को प्राथमिक वस्तुए एवं उत्पादित वस्तुओ का भी निर्यात होता है । भारत म्यांमार को प्राथमिक तथा अद्धनिर्यात स्टील, स्टील की छड़े एवं स्टील से बने अन्य उत्पाद, भातर द्धारा निर्यात की जाती है । भारत की दवा कंपनियों ने म्यांमार के 40% बाजार पार कब्ज़ा जमाया है ।

द्विपक्षीय व्यापार करीब 1600 किमी. लम्बे लीमा के आर – पार होता है । वर्ष 2009-10 में यह व्यापार 13.73 मिलियन डालर था जो पिछले वर्ष बढ़कर 9.8 मिलियन अमरीकी डालर हो गया । सीमा रेखा पर दो व्यापार स्थान निर्धारित किये गये हैं । मोरेह – तमू (1995) जवारवधार–ही (2004) जगहों से व्यापार शरू हो चुके है तीसरी जगह अवाखुंग –लेशी पर हाल में सूती धागे, गाडियों के पार्ट – पुर्जे, दवाँए एवं सोयाबीन भारत की ओर से तथा दालें, सूखी आदि, सुपाड़ी, हल्दि आदि वस्तुए म्यांमार की से सीमा व्यापार के रूप में विनिमय होती है ।

द्विपक्षीय व्यापार में 1980-81 से 2009-10 के बीच 12.4 मिलियन अमरीकी डालर से 1207.56 मिलियन अमरीकी डालर के रूप में बड़ी बढोतरी हुई है ।

भारत म्यांमार से दृषि आधारित उत्पादों, जिससे बीन, दालें एवं जंगलों के उर्पद शामील हैं , आयात करते हैं । यह भारत द्धारा आयातित वस्तुओं का 90% भाग है । भारत द्धारा म्यांमार को प्राथमिक एवं अर्धनिर्मित स्टील एवं दवाए निर्यात करता है । यागों के केन्द्रीय सांखियकी संगठन के अनुसार निर्यात – आयर के निम्नलिखित आँकड़े हैं ।

निर्यात भारत के साथ व्यापार (आधिकारिक विनियम दरों पर)

2004 - 05	-	341,40	मिलियन अमरीकी डालर
2005 - 06	-	489.10	मिलियन अमरीकी डालर
2006 - 07	-	733.59	मिलियन अमरीकी डाल
2007 – 08	-	727 .85	मिलियन अमरीकी डालर
2008 – 09	-	804.96	मिलियन अमरीकी डालर
2009 – 10	-	1010.56	मिलियन अमरीकी डालर

आयत

2004 – 05	-	83.37	मिलियन अमरीकी डालर
2005 – 06	-	80.37	मिलियन अमरीकी डालर
2006 – 07	-	159.54	मिलियन अमरीकी डालर
2007 – 08	-	173.46	मिलियन अमरीकी डालर
2008 – 09	-	146.18	मिलियन अमरीकी डालर
2009 – 10	-	194.03	मिलियन अमरीकी डालर

हाल के वर्षों में भारत सरकार द्धारा ऋण के जरिये म्यांमार में निवेश को बढ़ावा देने की लगातार प्रयास तेज किये गये हैं । भारत 13 वाँ सबसे बड़ा निवेशकर्ता है । इनके अनुमानत: 189 मिलियन अमरीकी डालर, म्यांमार में निवेश किया है । यह निवेश पांच परियोजनाओ में किया गया है । भारत का निवेश तेल एवं गैस क्षेत्र से लेकर जलविधुत एवं रेलवे एवं विधुत क्षेत्रों में हुआ है । भारत की और से बहुउपयोगी कलादान परियोजना पर 120 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश हुआ है । कलादान नदी विकाश द्विपक्षीय राजपथ के रूप में तथा रखीने राज्य में सिनवे बंदरगाह का निर्माण किया जा रहा है । इसके साथ ही 20 मिलियन अमरीकी डालर के निवेश के साथ 2121 मोटर्स द्धारा भारी मालवाहनों के निर्माण का प्लांट लगाया जा रहा है ।

उपरोक्त बातों के अलावे, भारत ने म्यांमार में विकास परियोजनाओ पर काम करना शुरू किया है । इन परियोजनाओं को भारत सरकार की ओर से ऋण एवं आर्थीक सहायता प्रदान किये जा रहे हैं । हाल के वर्षों में भारत ने बहुत से उच्च पथों के निर्माण में सहायता करने की इच्छा जहिज की है । तामुकले ओर ही रिडीम पथ के स्तर को उचां उठाने, भारत – म्यांमार– थाईलैंड के बीच उच्च पथ की प्रियोजुआ के अलावे रेलवे के साजो समान संचरण के लिये दूर संवेदी उपकरणों की आपूर्ति की परियोजनाए भी शामिल है ।[2]

आपसी यात्राएं

संस्थागत स्तर पर भारतीय उधोग महासंघ वाणिज्य महासंघ के बीच फरवरी, 2000 में एक समझौते पर हस्ताक्षर हुआ । इसी तरह भारतीय उधोग महासंघ एवं म्यांमार कम्प्युटर संघ के साथ भी एक समझौते पर हस्ताक्षर हुआ । वर्ष 2004 के फरवरी महीने में योगोन में भारतीय दूतावास के सहयोग से "भारत द्धारा उत्पादित वस्तुओ की एक प्रदर्शनी लगाई गई ।

भारतीय उधोगों द्धारा उतपादित वस्तुओं की प्रदर्शनी के दौरान वर्ष 2004 में म्यांमार उधोग एवं वाणिज्य महासंघ ओर भारतीय उधोग महासंघ के बीच एक संयुक्त कार्य दल के गठन के समझौते पर हस्ताक्षर किया गया । इसी तरह म्यांमार – भारत व्यापार कलब एवं भारत के उतर पूर्वी क्षेत्र के उधोग एवं वाणिज्य संघ के साथ भी आपसी समझौते किया गया । वर्ष – 2003 में गठित संयुक्त ब्यापार समिति के जरिये भारत – म्यांमार के बीच वाणिज्य संबंधो का नियमन (किलेबंदी) किया गया गई । ईस संयुक्त व्यापार समिति ने दोनों के बीच तेजी ले बढते वाणिज्य सबंधो का दिशा – निर्नेश किया है । इसके दिशा – निर्नेश में दोनों देशो ने यूनाईटेड बैंक ऑफ इण्डिया एवं म्यांमार फारेन ट्रेड बैंक" तथा म्यांमार इन्व्स्ट्मेंट एंड कमीशन बैंक भी शामील है। ईस व्यवथा से सीमा व्यापार एवं द्विपक्षीय व्यापार में भारी बढोतरी हुई है । अक्टूबर 2009 में भारत – म्यांमार संयुक्त व्यापार समिति के तीसरी बैठक में, सीमा व्यापार को आम व्यापारिक गतिविधि में बद्युस का निर्णय लिया गया जिससे द्विपक्षीय व्यार को बढाया जा सके ।

भारत के लिए म्यांमार, एशियान देशो तक पहुचने का द्धारा है । क्योंकि यही एक एशियन देश है जिसकी जमीन एवं

समुंद्र की सीमाए भारत से जुडी हुई है । भारत एवं एशियान देशो के बीच स्वंतंत्र व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर के बाद दोनों हिस्सेदारों के बीच व्यापार में बढोतरी आवश्यक है । भारत एवं म्यांमार के बीच द्विपक्षीय निवेश बढाओ समझौते पर हस्ताक्षर हुआ है जिससे दोनों देशो में आवाजाही में बढ़ोतरी होगी । दोनों देशो ने दो बार कर लगने पर रोक के समझोते पर भी हस्ताक्षर किया है जिसके मरहट सिर्फ जिस देश की कम्पनी पर भी हस्ताक्षर किया है जिसके मातहत सिर्फ देश दी कंपनी है उसे एक देश में ही उसके व्यापारिक लाभ पर उसे कर देना होगा ।

दोनों देशो के बीच उच्च स्तरीय आपसी यात्राओं तथा " बिम्सटेक " एवं " सार्क " जैसे क्षेत्रीय संस्थाओ में नजदीकी हिस्सेदारी से दोनों देशो के बीच आर्थिक संबंधो को बढ़ावा मिल रहा है । हाल के दिनों देशो के उच्च स्तरीय नेताओ एवं अधिकारीयों ने यात्राएं की हैं उसमे अप्रील 2008 में वरिष्ठ उप सेनापति जे०

माँग आये, भारत के उपराट्रपति मो. हामिद अंसारी की 2009 की म्यांमार यात्रा तथा हाल में वरिष्ठ सेनापति थान स्वे द्धारा जुलाई, 2010 में भारत की यात्रा शामील है ।

म्यांमार और भारत ने पिछले कुछ वर्षों से व्यापार एवं निवेश के संबंधो को मजबूत किया है । विभिन्न व्यापारिक संस्थाओ जिसमे म्यांमार के व्यापार एवं वाणिज्य संस्थाओ, भारत वाणिज्य एवं व्यापार यहाँ से उतर पूर्व के व्यापारिक संगठन के साथ - साथ वर्ष 2010 में कलकता सिथत वाणिज्यिक संघ की यात्राओ से आपसी मित्रवत संबंधो को मजबूती मिली है । भारतीय वाणिज्य और व्यापार संघ की ओर से योगोन एवं मंद्ये में एक उतर पूर्व भारत पर एक शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर में सीमा व्यापार पर रौशनी डाली गई और भारत की ओर से 52 सदस्यों के मजबूत प्रतिनिधिमंडल ने इसमे हिस्सा लिया

बढते द्विपक्षीय संबंधो के चलते दोनों देशो के निजी उधमियो के ढेरो पत्र प्राप्त हो रहे है । म्यांमार स्थित भारतीय दूतावास में व्यापारिक गतिविधियों के बारे में म्यांमार ओर भारतीय उधमियो के ढेरो पत्र प्राप्त हो रहे है । म्यांमार के कीमती पत्थरों तथा आभूषणों और दवा क्षेत्र के व्यापारिक प्रतिनिधि भारत में लगाये जाने वाले प्रदर्शनियों में लगातार हिस्सा ले रहे है । भारतीय वाणिज्य दूतावास भारतीय एवं स्थानीय व्यापारिक संगठनों देने का काम कर रहा है

अल्प – विकसीत देशों के लिए कर मुक्त योजना :

दिसम्बर, 2005 के हाँगकाँग मंत्री स्तरीय घोषणा के अनुरूप भारत ने अल्पविकसीत देशों के लिये कर युक्त योजना को लागु कर दिया है ।

2. **योजना की सुविधाएँ :**

(i) कर युक्त सामग्रियाँ – भारत में आयतित 85% प्रतिशत सामग्रियों पर लागने वालि तटकर 5 वर्ष तक समाप्त काज दिए जायेंगे । इस सिलसिले में हर वर्ष 20% की घटोतरी होगी । अगस्त, 2008 से 2009 तक दो घटोतरियाँ हो चुकी हैं ।

(ii) सकारात्मक सूची – 85% कर में मुक्ति के साथ उन सामग्रियों पर जो 9% लार देते है उन्हें बाजार तक पहुचने के लिए अतिरिक्त सुवोधाए दी जाएगी । बाजार तक पहुचने की सुविधाएँ 10% सामग्री से लेकर 100% तक हो सकती है और यह सुविधा, आयात की तारीख पर जो कर लगता उसके आधार पर दी जायेगी ।

(iii) सूची से बहार की सामग्री – यह तटकर लगाने वाली सामग्रियों का मात्र 6% है जिसके लिए तटकर से अलग करने की सुविधा हासिल नहीं है ।

3. यह योजना अल्पकिसित देशों के तमाम वैशिवक निर्यातों के 92.5% सामग्री को सुविधाएँ हासिल हैं । अफ्रीका के तत्कालिक हितों से जुड़े उत्पाद जैसे रुई, कोकोआ, अल्युमिनयम अयस्क, तांबा अयस्क, काजू, ईख से तैयार चीनी, तैयार कपडे, मछली को बहार जाने वाला वर्तन तथा गैर औधोगिक हीरे इसमें शामील हैं ।

4. इस योजना का लाभ पाने के लिये अल्पविकसित देशो को इन नशो से निर्यात होने वाले सामानों की सूची भारत सरकार को सुपूर्द करनी चाहिये तथा उन अधिकारियो की सूची भी पेश करनी चाहिये जो उन वस्तुओं के मूल स्थान के बारे में प्रमाण पत्र निर्गत करेंगे । यह योजना सभी अल्पविकसित देशों जिसमें 33 अफ्रीकी देश शामील हैं, के लिये खुली हुई है।

वर्ष 2000 से विशिष्ट अतिथियों की यात्राएँ

वर्ष 2000 से दोनों देशों के उच्च स्तरिय प्रतिनिधि मंडलों का अवागमन होता रहा है जनवरी ,2000 में वरिष्ठ उप सेनापति जे. माग शिलांग से अपनी यात्रा शुरू करने के बाद भारत की सप्ताह भर की यात्रा की । भारत के उप - राष्ट्पति भेरोसिंह शेखवत ने 2से 6 नवम्बर वर्स 2003 में म्यांमार की यात्रा की /

राजीव गाँधी द्धारा 1987 में म्यांमार की यात्रा के बाद यह किसी भी विशिष्ट अतिथि की पहली म्यांमार यात्रा थी । इस यात्रा के दौरान 7 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए म्यांमार के प्रधान जेनरल थान स्वे भारत के राष्ट्पति के आमंत्रण पर वर्ष 2004 में बिदेश उघोग उर्जा रेल परिवहन संचार विज्ञान एवं तकनीक स्वास्थ्य एवं धार्मिर्क मामलो के साथ 24 से 26 अक्टूबर 2004 तक भारत की ऐतिहासिक यात्रा की इस यात्रा के दौरान गैर परंपरागत सुरक्षा मुछो और म्यांमार के चिन्द्विन नदी के ऊपर तमान्यी जलविधुत परियोजना के बारे में दो समझौता पर हस्ताक्षर हुए दोनों देशों ने आधारभूत संरचनाओं के बिकाश एवम उर्जा
क्षेत्र में सहयोग के बारे में गहरी रूचि दिखाई राष्ट्रपति ए पि जे अब्दुल कलाम ने म्यांमार के राज्य शांति एवम बिकाश परिषद के प्रधान सेनापति जे थान स्वे के ।निमंत्रण पर वर्ष 2006 में 8 से 11 मार्च तक म्यांमार की यात्रा की । भारत ने यागोन स्थित दूर संवेदी सुचना प्राप्ति केन्द्र को उच्च स्तरीय बनाने के लिए 3

मिलियन अमरीकी डॉलर सहायता के घोषणा की इसके साथ –साथ कलादान बहुदेशीय परिवहन परियोजना में म्यांमार के अंशदान

को सुनिशिचत करने के लिये 10 मिलियन अमरीकी डालर तथा 20 मिलियन अमरीकी डालर भारी करो वाले जल पंपों की खरीद के लिये ऋण मुहैय्या करने की घोषणा की गई । राजकीय शान्ति एवम विकाश परिषद के वरिष्ठ उप सेनापति मांग आर ने वर्ष 2008 में भारत के राष्टपति के आमंत्रण पर भारत की यात्रा की । इस यात्रा के दौरान (1) कलादान नदी पर बहुउछेशीय परिवहन परियोजना के निमार्ण एवम उसे चालू करने के ढंचे पर समझौता (2) गुप्त सूचनाओ के आदान – प्रदान तथा दो बार कर लगाने की प्रणाली को समाप्त करने के सवाल पर समझौते पर हस्ताक्षर किये गाये । म्यांमार के प्रधानमंत्री श्येन स्मेंन ने दिल्ली में आयोजित " बिम्सटेक " संगठन के प्रधानों की बैठक में शिरकत की ।

11 दिसम्बर, 2010 को भारत के विदेश मंत्री एस. एस. कृष्णा के नेतृत्व में ने-येई-राव में आयोजित 12 वां मंत्री स्तरीय बैठक में एक प्रतिनिधि – मंडल शामिल हुआ । भारत के राष्ट्रपति के निमत्रंण पर म्यांमार

राजकीय शांति एव विकाश परिसद के अध्यक्ष वरिष्ठ जे . थान स्वे ने भारत कि राजकीय यात्रा की यात्रा के दोरान निम्लिखित दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किये गये (i) अपराधिक मामलो में सहायता)ii(छोटे विकास से जुड़े योजनाओं के लियें भारत द्धारा आर्थिक सहायता पर समझोता (iii) सुचना के आदान – प्रदान तथा म्यांमार ,सिथ्त बंगाल में अन्नदा मंदिर के उद्दार के कार्य १ दूर संचार , रेलवे , स्वास्थ्य और कूषी के बारे में घोषनाय की गईं , दिल्ली में राजनेतिक वार्ता के बाद प्रतिनिधिमंडल ने हेदराबाद , जमशेदपुर का दौरा किया जहां उन्होने जैव तक्मीक सुचना तकनीक तथा ऑटो मोबाइल उयोगों को देखा , जनवरी ,**20 से 22** , **2011** को ने-पेई –रुख में आयोजित **13** वें विन्स्तेक मंत्री स्तरीय बैठक में शिरक्त करने के लिय भारत के प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई भारत की बिदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रीतम कौर नर किया ,

म्यामार में भारत की बड़ी परियोजनाएं

भारत की सरकार म्यांमार में दर्जनों आधारभूत संरचनाओ एवं गैर –आधारभूत संरचनाओ एवं गौर आधारभूत संरचनाओं से जुंडे परियोजनाओं के कार्य में सक्रिय भागीदारइ कर रही है

इन परियोजनाओं में 160 कि.मी . तामु कलेवा कलेमेयो पथ को स्तरीय बनाने तथा ही टी डिम एवं ही – फालम पथ का निमार्ण एवं स्तरीय बनाना शामिल है इसके साथ कलादान बहूदेशीय परियोजना भी शामिल है टी . सी .आई .एल0 द्वारा म्यांमार के 32 भाहरों में उच्च गति वाला आंकड़ा इकठ्ठा करने वाला तंत्र की स्थापना की गई है। तेल एवं गैस निगम, विदे"ा लिमिटेड, गेल एवं इस्सार कम्पनियॉ म्यांमार के ऊर्जा क्षेत्र में हिस्सेदार हैं। राइट्स म्यांमार के रेलवे परिवहन के विकास तथा रेलवे डिब्बों, इंजनों एवं पार्ट–पुर्जो की आपूर्ति करता है।

वर्ष 2008 के सितम्बर महीने में चिन्दविन नदी घाटी में तामन्यी एवं भवीजे जेल विद्युत परियोजना के विकास के लिए म्यांमार के विद्युत मंत्रालय, पावर–और राश्ट्रीय जलविद्युत निगम के साथ समझौता हुआ। एन0एच0पी0सी0 प्रत्यक्ष भागीदारी की तैयारी कर रहा है। टाटा मोटर्स द्वारा म्यांमार में भरी टर्बो–ट्रक को जोड़ने का एक कारखाना खड़ा किया जा रहा है। भारत सरकार के आर्थक सहायता का उद्घाटन 31 दिसम्बर, 2010 को किया गया। भारत–म्यांमार औद्योगिक प्र"ाक्षण केन्द्र की स्थापना एच0एम0टी0 (1) द्वारा की गई है। इसके लिए भारत सरकार ने आर्थिक सहायता दी है। म्यांमार–भारत अंग्रेजी प्र"ाक्षण केन्द्र, म्यांमार–भारत उद्यमी विकास केन्द्र, भारत–म्यांमार, सूचना तकनीकी क्षमता विकास केन्द्र कार्यरत हैं।

वाणिज्यिकी एवं आर्थि संबंध

2009–10 के बीच द्विपक्षीय व्यापार 12.4 मीलीयन (1980–81) अमरीकी डॉलर से बड़कर 1207.56 मीलीयन डॉलर (2009–10) हो गया है। भारत द्वारा म्यांमार से आयातित सामानों में कृशि उत्पादों का बर्चस्व रहता है। भारत द्वारा म्यांमार से आयातों में 90 प्रति"ात बीन, दालों तथा जंगल आधारित उत्पाद होते हैं। भारत के प्रमुख निर्यात में प्राथमिक एवं अर्द्ध–निर्मित स्टील एवं दवाएँ होती हैं। यागोन के केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के मुताबिक निर्यात–आयात के ऑकड़ निम्नलिखित हैं।

म्यांमार : भारत के साथ व्यापार

आयात	अमरीकी डॉलर		
2004-05	341.40	83.37	424.77
2005-06	489.10	80.07	569.17
2006-07	733.59	159.54	893.13
2007-08	727.85	173.46	901.31
2008-09	8004.96	146.18	951.14
2009-10	1010.56	194.03	1204.59
2010–11	**551.83 (अप्रैल–अक्टुबर)**	**88.00**	**63.83**

संस्थागत स्तर पर भारतीय उद्योग संघ तथा म्यांमार वाणिज्य एवं उद्योग संघ के बीच वर्श 2000 में आपसी सहमति हुई। वर्श 2001 में भारतीय उद्योग महासंघ एवं म्यांमार कम्प्यूटर संघ के बीच आपसी सहमति पर हस्ताक्षर हुए। भारतीय उद्योग महासंघ एवं म्यांमार उद्योग एवं वाणिज्य महासंघ के बीच एवं कार्य दल गठित करने पर आपसी सहमति पर हसक्षर हुए। इसी तरह भारत–वर्मा व्यापार क्लब एवं उत्तर–पूर्व क्षेत्र के उद्योग एवं वाणिज्य महासंघ के साथ आपसी सहमति पर हस्ताक्षर हुए। वर्श 2008 में भारत और म्यांमार के बीच तीसरे संयुक्त व्यापार समिति की बैठक में युनाईटेड बैंक ऑफ इंण्डिया के म्यांमार के तीन राश्ट्रीय बैंकों म्यांमार फॉरेड ट्रेड बैंक, म्यांनमा इकोनोमिक बैंक तथा म्यांनमा इनवेस्टमेंट एण्ड कमि”ायल बैंक के साथ आपसी सहमति पत्र पर समझौता किया। जिससे व्यापार को बढ़ावा मिले। वस्तुतः इस रास्ते का उपयोग सिर्फ सीमा के लिए किया जा रहा है। इसके अलावे वर्श 2008 में दो जगह कर लगाने के प्रावधानों से मुक्ति तथा द्विपक्षीय निवे”ा बढाओ समझौता पर हस्ताक्षर हुए। अगस्त 2009 में हुए भारत–एि”ायान वस्तुओं के व्यापार समझौते पर भारत–म्यांमार में भी हस्ताक्षर किये हैं।

अल्पविकसित दे”ाों के साथ तटकर समाप्ति की योजना का लाभ म्यांमार को भी हासिल है।

सीमा–व्यापार

भारत और म्यांमार ने 1994 में सीमा व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किया। भारत–म्यांमार के बीच 1664 किमी सीमा रेखा पर दो स्थान मोरेह–तापू और जोखादार ही व्यापारिक कार्यों के लिए नि”चत किये गये हैं। एक तीसरे व्यापारिक स्थान अवाखुंग–पनसट/सोमरा को नियत करने पर समझौता हो चुका है। भारत–म्यांमार के बीच आयोजित तीसरे संयुक्त व्यापार कमिटी की बैठक में अभी तक सीमा पर व्यापार के लिए नियत स्थानों सामान्य व्यापार के लिए खोल दिया जायेगा जिससे द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाया जा सके। दोनों ओर सये इस संबंध में सूचनाएँ जारी कर दी गई है।

मुद्रा–म्यांमार–भार सीमा पर मुद्रा विनियम में कठिनाईयों के चलते द्वितीय व्यापार की स्थिति कमजोर ह। बहुत बार भारतीय मुद्रा में गिरावट आ जाती हैं। भारतीय मुद्रा में तेज गिरावट का कारण चीन–वर्मा सीमा पर चीनी मुद्रा युआन में आई गिरावट का परिणाम होता है। अभी तक इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है कि सभी डॉलर खाता और उसके स्थान पर यूरो खाता का बंद करने से भारत–म्यांमार सीमा व्यापार के विकास

में क्या सहायता मिली है। हाल के दिनों में म्यांमार की सरकार ने इस बात पर सहमति जताई है कि सभी पडोसी मुल्कों के साथ व्यापार यूरो मुद्रा के जरिये साथ ही साथ उस दे"ा की मुद्रा के जरिए होगी।

दालें – हालॉकि भारत दालों का बड़ा उत्पादक दे"ा है लेकिन अपनी जरूरतों का 50 प्रति"ात इसे बाहर आयात करना पड़ता है। इसने राश्ट्रीय कृशि सहयोग एवं विपणन संघ एवं दो अन्य संस्थाओं को दालों के आयात की जिम्मेदारी दी है। भार ने दालों के आयात को तटकर से मुक्त रखने की घोशण की गई है। भारत में दालों की मॉग की सबसे ज्यादा आपूर्ति म्यांमार से होती हैं। म्यांमार अपने वै"वक आपूति का 60 प्रति"ात भारत को निर्यार करता है। लेकिन भारत को म्यांमार से दालों के आयात में कठिनाई उत्पन्न हो रही है क्योंकि पडोसी दे"ा में निजो व्यापारियों का विपणन पर वर्चस्व है। उन्हें जब भी जानकारी होती है कि भारत सरकार दालों का आयात करने वाली है, वे उसकी कीमतें बढ़ा देते हैं। किमतों को रेकने एवं इसकी कमी का पूरा करने के लिए वर्मा पर निर्भर करने के अलावा भारत के पास कोई दूसरा रास्ता नहों है।[2]

म"ाालें :

भारत एवं म्यांमार के बीच म"ाले के बाजार के लिए कड़ी प्रतिस्पर्द्धा है। खासकर सब्जी एवं चटनी में मिलने वाले हल्दी आदि में। म"ाले के विपणन में भारत की ज्यादा बडी पकड़ है लेकिन इस क्षेत्र में म्यांमार से हाल के दिनों में कड़ी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता है।

भारत की हल्दी अन्तराश्ट्रीय बाजार में जब 1.350 अमरीकी डॉलर प्रति टन के हिसाब से बिक रहा था वहीं म्यांमार की हल्दी की किमत मात्र 500 अमीरीकी डॉलर प्रति टन था।

भारतीय हल्दी के ऊॅचे दाम के कारण कम उत्पादन तथा स्थानीय बाजार में बड़ी मॉग थीं पिछले वित वर्श में भारत ने 34,500 टन हल्दी नियॉत किया जिसकी किमत 27.52 मिलीयन अमरीकी डॉलर थी। पिछले वर्श की तुलना में यह निर्यात 20 प्रति"ात कम था। लेकिन अब भारत के लिये परिस्थिति बदली है। पिछले वर्श उत्पादन में भारी इजाफे के चलते घरेलू बाजार में हल्दी को किमतों में सिथरता आई है। इससे लगता है कि निर्यात बढ़ेगा और फिर से अन्तराश्ट्रीय बाजार में वर्चस्व स्थापित कर सकेगा।

चाय–म्यांमार वर्श में 90 मीलीयन किग्रा0 चाय पैदा करता है इसका 65 प्रति"ात हिस्सा उत्तरी भााग राज्य में पैदा होता है।

चाय का इस्तेमाल विभिन्न तरह के धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में होता है। राजकीय समारोहों में भी इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

म्यांमार में तीन तरह की चाय का उत्पादन होता है। हरी, काली औश्र 52 प्रति"ात हीह, 31 प्रति"ात काली एवं 17 प्रति"ात की चाय उत्पादनों में हिस्सेदारी है। लोकप्रयि राश्ट्रीय ना"ते में काली चाय एक आव"यक तत्व है।

म्यांमार का एक व्यापारिक प्रतिनिधिमेंडल ने अम का दौरा किया और भारत से चाय के उत्पादन को बढाने की तकनीक की सहायता मॉगी। वे भारत के चाय उद्योग की सहायता, चाय के उत्पादन एवं गुणवता

को बढ़ाने के दृश्टिकोण से मॉग रहे हैं। दक्षिण भारत स्थित नीलगिरी चाय बगान ने अभी अवसर को अपने हाथ में नहीं लिया है।

कीमती पत्थरों का व्यापार

म्यांमार दनियॉ भर में कीमती पत्थरों के उत्पादक के रूप में म”ाहूर है। इसके पास 9 कीमती पत्थर हैं। रूबी, हीरा, नीला पत्थर (बिल्ली की ऑख) पन्ना, पुखराज, नीलम, मूँगा तथा पीलापन लिए हुए रक्तमणी इत्यादि। म्यांमार में कीमती पत्थरों के उत्पादन के तीन प्रसिद्ध स्थान है। माण्डले मंडल के मोगोक, भाान राज्य के मांग”ाू तथा कचिन राज्य के फेकान्ट में। कीमती पत्थरों का व्यापार विदे”ाी धन कमाने का सबसे बड़ा साधन है। म्यांमार ने 1964 से लगातार कीमती पत्थरों का प्रद”र्ानी लगानी भाुरू की। इन कार्यक्रमों से इसने 600 मीलीयन अमरीकी डॉलर कमाया है। भारतीय कीमती पत्थारों और आभूशण निर्यात बढ़ाओं परिशद ने भारतीय खरोदारों को इन कार्यक्रमां में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करने का काम भाुरू किया है।

भारतीय म्यांमार सीमा पर कीमती पत्थरों की तस्करी एवं बड़ा मुद्दा है। रूबी, पीले हीरे आदि अन्य कीमती पत्थर म्यांमार से तस्करी के जरिये भारत में बेच दिया जाता है। कीमती पत्थरों की आपसी एवं नकली को पहचान करने की क्षमता नहीं रहने के चलते तस्कर, भारतीय व्यापारियों को ठग लिया करते हैं।

भारतीय सरकार वर्मा–भारत सीमा पर कीमती पत्थरों की तस्करी रोकने का प्रयास कर रही है। अभी हाल में मीजोरम में कीमती पत्थरों की पहचान के लिए प्रि”ाक्षण केन्द्र खोला गयाहै जिसमें नौजवानों को कीमती पत्थरों के सही एवं गलत की पहचान का प्रि”ाक्षण दिया जाता है।

न”ाीले पदार्थों का व्यापार

भारत–म्यांमार की खुली सीमा में भारत को न”ाीले पदार्थों के आने का सामना करना पड़ता है। सीमा पर न”ाीले पदार्थों की तस्करी के जरिये अस्त्र–”ास्त्र खरीदे जाते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय सेना ने पिछले वर्श वर्मा की सीमा से अन्तराश्ट्रीय बाजार में 30 करोड़ रूपये की कीमत वाला न”ाीले दावाओं का जखीरा बरामद किया। मणीपुर, मिजोरम एवं नागालेंड में न”ाीली दावाओं की समस्या का प्रधन श्रोत म्यांमार है। दोनों दे”ाों की जड़ी सीमाओं पर न”ाीली दवाओं की तस्करी रोकने के लिए बहुत से समझौते हुए हैं। हाल में भारत ने मीजोरम एवं म्यांमार के बीच 440 किमी लम्बे सीमा पर लोहे की बाड़ लगाने की घोशण की है। इसने मणीपुर के मोरेह के पास 14 किलोमीटर सोमा रेखा को भी घेरने की घोशण की गई है।

व्यापार मेला एवं वियणन प्रोत्साहन

वर्श 2011 में फर्मा एक्ससिल एवं म्यांमार मेडिकल एसोसिये”ासन के तत्वाधन में यागोन मे मेला लगा। उत्तर पूर्व भारत का ि”ाविर 2010 के सितंबर महीने में माण्डले में लगा। भारतीय चेम्बर ऑफ बायर्स एवं म्यांमार चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड ट्रेड ले कलकता एवं मुम्बई का दौरा किया।

प्रf"k्षण कार्यक्रम

आई0टी0इ0सी0 कॉलम्बों के अन्तर्गत टी0सी0एस0, जी0एस0एस0 एवं एम0जी0एस0एस0 के अर्न्गत म्यांमार के लोगों को प्रf"k्षण का लाभ मिल रहा है। म्यांमार के प्रf"k्षुओं की संख्या निम्नलिखित है। आई0टी0सी0 – 140, एम0जी0सी0एस0उस0–101 इसका उपयोग बहुत अच्छा रहा है। भारत ने 25 पत्रकारों को भी प्रf"k्षण दिया है।

सांस्कृतिक विनिमय

1997 से भारतीय सांस्कृतिक समूहों द्वारा लगातार कार्यक्रम आयोजित कियश्र जा रह हैं। दोनों दे"kों के विभिन्न सांस्कृतिक समूहों ने दोनों दे"kों का दौरा किया है। नवम्बर, 2009 में म्यांमार क छात्र प्रतिनिधिमण्डैल ने सार्क सांस्कृतिक मेले में हिस्सा लिया। दिसम्बर, 2009 में वर्मा के एक लोकप्रिय बैण्ड ‘‘इन्पटर‘‘ ने भारत का दौरा किया और दक्षिण एf"k्या बण्ड मेले में हिस्सा लिया। उन्होने f"kलांग एवं मेधालय में भी कार्यक्र में भी कार्यक्रम पे"k किये।

जनवरी, 2010 में भारतीय दूतावास ने भारतीय फिल्म मेले का आयोजन यागोन में किया। यागोन का यह वार्शिक फिल्म मेले एक यादगार दिन हो गया। मार्च, 2010 में वर्मा के एक प्रसिद्व कलाकर ने एf"kयन कलाकर कैंप में हिस्से लिया जो आई0सी0सी0आर0 एवं एस0ई0उच0ई आ0 द्वारा आयोजित किया गया। इस कैंप में जो पेंटिंग बनाई गई दूतावास के सभागत में दिखाया गया जिसे सभी लोगों ने सम्मानित किया। म्यांमार से 15 सदस्यीय थियेटर समूह ने भारत में आयोजित एf"kयन थियेटर मेले में हिस्सा लिया। भारत के साबरी बंधुओं ने यागोन में कब्बाली गया। भारत नाट्यम और योग की कक्षा दूतावास में दिसम्बर, 2010 से ही लगायी जा रही है।

भारतीय प्रवासी

म्यांमार में भारतीय मूल के लोगों का उदय 19वीं सदी के मध्य में खोजा जा सकता है जबकि बर्मा के निचले भाग पर 1852 में अंग्रेजों का कब्जा हो गया।

म्यांमार के दो नगरों यागोन (जो पहले रंगून कहलाता था) और माण्डले में भारतीयों की वर्चस्ववादी उपस्थिति थी। नागरिक सेवाओं, f"k्षा, व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र मं इनका व्यापक दबदबा था। 1983 की सरकारी जनगणना के मुताबिक प्रवासी भारतीयों की संख्या 428, 428 है और राज्य विहीन प्रवासी भारतीयों को संख्या 250.000 है। भारतीय समुदाय का बड़ा हिस्सा करीब 150,000 बागो, मॉन और टेनीथारी में रहते हैं। प्रवासी परिवार यागोन में रहते हैं तथा वे निर्यात–आयात व्यापार से जुड़े हुए हैं। वे बहुराश्ट्रीय निगमों में काम करते हैं जो भारत, भारतीय दूतावास, टूरिस्ट, व्यापार, मेडिकल, अध्ययन, प्रf"k्षण, कहीं बाहर जाने के क्रम में रूकने तथा अन्दर आने का वीसा निर्गत करते हैं।[3]

भारत के साथ वायु सम्पर्क सुविधाजनक यात्रा के रास्ते।

1. थाई एयरवेज के जहाज भारत के विभिन्न भाहरों तक बैंकाक के रास्ते आते हैं।
2. भारतीय एअर लाइन्स के जहाज कलकता यागोम (आना–जाना) के बीच सप्ताह में दो बार जाते–आते हैं। यह उड़ान सोमवार और भाुक्रवार को होता है।

भारत और म्यांमार के बीच क्षेत्रीय एवं उप–क्षेत्रीय संदर्भ में सहयोग –

ए"ियान–म्यांमार जुलाई, 1997 में ए"ियासन का सदस्य हो गया। यह अकेला ए"ियान दे"ा है जो भारत के साथ जमीनी सीमा से जुड़ा हुआ है। सहयोग के कुछ प्रस्तावों को लागू किया गया है और कुछ ए"ियान के ढॉचे के अन्तर्गत बातचीत हो रही है।

बिम्सटेक– दिसम्बर, 1947 में म्यांमार ने "बिम्सटेक" की सदस्यता ग्रहण की। म्यांमार "बिम्सटेक" द्वारा पारित स्वतंत्र व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने वाला दे"ा है। म्यांमार विम्सटेक क्षेत्र में थाईलैंड और भारत के साथ व्यापार करता है। म्यांमार भारत को कृशि, उत्पादों एवं जंगल के उत्पादों का निर्यात करता है। वह भारत से रासायनिक उत्पाद, दवाएँ, विधुत उपकरण एवं परिवहन उपकरण आयात करता है। 13वॉ विम्सटेक मंत्री स्तरीय बैंठक जनवरी, 2011 में म्यांमार में हुई।[4]

मेकोंग–गंगा सहयोग

म्यांमार मेकोग–गंगा सहयोग की स्थापना काल नवंबर 2000 से ही सदस्य है। यह छः दे"ाों की पहल से स्थापित किया गया है। इसमें भारत, म्यांमार के अलावे कम्बोडिया, लाओस, थाइलैंड एवं वियतनाम भाामिल हैं। इन दे"ाों के बीच यात्राओं, ि"ाक्षा, संस्कृति, परिवहन एवं संचार के क्षेत्रां में सहयोग होगा। इस संस्था का अध्यक्ष पद दे"ा के नाम के अक्षर के आधार पर तय किया जाता है।[5]

सार्क– म्यांमार को अगस्त, 2008 में पर्यवेक्षक की हैसियत से प्रवे"ा मिला। भारत एवं म्यांमार क दे"ाों के बीच सीमा व्यापार बढ़ाने के लिये बहुत सी पहल हो रही है। भारत ने दोनों दे"ा में कर लगाने के प्रावधान को खत्म करने के प्रस्तावित समझौते पर सहमति दे दी है। जब यह समझौता लागू हो जायेगा तो निवे"ा बढ़ेगा। भारत से तकनीकी एवं लोगों का आना–जाना बढ़ जायेगा। इससे कर की स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा तथा दोनों दे"ाों के बीच आपसी सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।[6]

भारत सरकार ने युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया को मणीपुर व्यापारिक स्थान के मोरेह को म्यांमार स्थित तामू स्थान पर इकोनोमिक बैंक से जोड़ने की सहमति दे दी है। दोनों बैंक ऋण पत्रों की सहूलियतां का इस्तेमासल करेंगे। इसके अन्तर्गत भारतीय रूपये एवं बर्मी क्याट वैधानिक तौर पर इन बैंकों में विदे"ाी मुद्रा में बदले जा सकेंगे।

बैंकिंग सहुलियतों को आसान बनाने के लिये दोनों बैंक टेलीफोन से जुड़े रहेंगे। भारत सरकार दोनों बैंकों को हॉट लाईन से जोड़ने का प्रयास करेगी। जब ये सहुलियतें भाुरू हो जाएँगी तो रूपय का आदान–प्रदान बहुत आसान हो जायेगा और व्यापार अपने आप बढ़ जायेगा।

व्यापार के लायक वस्तुओं की सूची भी बढ़ जायेगा। अभी तक यह 22 बस्तुएँ ही हैं। नई दिल्ली इस सूची में जीवन–रक्षक दवाएँ, साइकिल के कल–पुर्जे, खाद, श्रृंगार प्रसाधन, कपड़े मोटर साइकिल के पुजं, एक्स–रे पेपर जोड़ना चाहती है।

म्यांमार के लोगों को स्वतंत्र रूप से मोरेह भाहर तक आने देने की योजना है। मणीपुर सरकार ने मोरेह भाहर तक आने देने की योजना है। मणीपुर सरकार ने मोरेह भाहर की आधार–भूत संरचनाओं के विकास के लिये केन्द्र सरकार के पास 200 करोड़ रूपये की योजना भेजी है। इसके जरिये एक सुगठित जॉच स्थान भी बनाया जायेगा।7

अन्ततः भारत के बहुत लोग यह नहीं जानते हैं कि म्यांमार क्या उत्पादन करता है और उन उत्पादों का अधिकारिक रूप से व्यापार किया जा सकता है। दो व्यापारिक हिस्सेदारों के बीच मजबूत संचार व्यवस्था का होना द्विपक्षीय व्यापार के विकास के लिये आव"यक है। इन दोनों दे"ाों के बीच व्यापार प्रोत्साहन अभियान से जागरूकता बढ़ेगी। व्यापारिक समुदाय नेतृत्व लेकर व्यापार की मात्रा को बढ़ाने का काम करेंगे।

सन्दर्भ :–

1. डब्ल्यू0 डब्ल्यू0 डब्ल्यू0 सी0बी0ई0, गोभ, इन।
2. एच0टी0टी0पी0/एम0ई0ए0 इण्डिया एन0आई0सी0, इन।
3. भारत म्यांमार व्यापार संबंध सैयद अली मुज्तबा पीच एच0डी0–7/23/2 बाय डब्ल्यू0डब्ल्यू0डब्ल्यू0 ग्लोबल पालिटि"ायन कॉम।
4. फैजल याहया, विस्फोटक एवं ए"ायन क्षेत्रीय एवं अन्तर क्षेत्रीय सहयोद के उदय के रूप, आस्टेलियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस।
5. S.D. Muni, Expending SAARC in world Focus, New Delhi.
6. B.A. Prasad, India's Rule in the Future of SAARC, in Strategic Analysis, Delhi.